ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे **निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून**

वर्षः 27 अंकः 14 बुलेटिन अवधिः 17–21 फरवरी 2018 दिनः शुक्रवार दिनाँकः 16 फरवरी, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	17–02–2018	18–02–2018	19–02–2018	20–02–2018	21–02–2018
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	24	24	25	25	25
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	6	6	6	7	8
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	85	85	85	85
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	40	40	40	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	006	006	006	008
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (9 से 15 फरवरी 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान में आंशिक से घने बादल छाये रहे तथा 4.0 मि0मी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 17.5 से 24.5 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 2.5 से 13.6 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 78 से 97 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 35 से 72 प्रतिशत एवं हवा 4.4 से 7.6 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम–उत्तर–पश्चिम व पश्चिम–दक्षिण–पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- सरसों वर्गीय फसलों में पत्तियों पर भूरे रंग के गोल छल्लेदार धब्बे दिखाई देने पर मैनकोजेब 1.5 से 2.0 किग्रा0 प्रति ली0 की दर से छिड़काव करे।
- राई व सरसों में आवश्यकतानुसार दाना भरने की अवस्था पर सिंचाई अवश्य करें।
- राई व सरसों में माहू का प्रकोप हो तो थियामेथोक्जाम 25 डब्ले0 एस0जी के 100 मि0ली0/है0 या मिथाईल ओ–डेमिटान 25 ई0सी0 के 1.0लीटर/है0 को 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- राई व सरसों में फूल आते समय मधुमक्खियों के 2–3 बक्सें/है0 एक महीना तक रखे ताकि परागण क्रिया में बढ़ोत्तरी के फलस्वरूप उपज में 10–15 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हो सके।
- बसंतकालीन गन्ना की बुवाई 15 मार्च तक पूरा कर लेनी चाहिए।
- गन्ना बीज हेतु गन्ना के उपरी दो तिहाई भाग का प्रयोग करेंगें। प्रति हैक्टर 3 आँखें वाले 40–50 हजार टुकड़े प्रयोग करें। लाईन पूरब–पश्चिम दिशा में 75 से0मी0 की दूरी पर बनाए।
- गन्ना के बीज का शोधन 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति लीटर पानी के घोल में 10–15 मिनट बीज को डुबाए। उर्वरक 120:60:40 एन0पी0के0/है0 प्रयोग करें।
- सूरजमुखी की मार्डन, सूर्या, आदि की बुवाई फरवरी के दूसरी पखवाड़े में करें।
- जायद मे मक्का हेतु संकुल प्रजातिया, नवीन, श्वेता, नवजोत, कंचन, सूर्या, गौरव, मीठी मक्का– माधुरी तथा संकर मक्का की गंगा–11 (हरा भुट्टा हेतु) की बुवाई फरवरी के दूसरे पखवाड़े तक अवश्य करें।
- गेहूँ की फसल मे निचली पत्तियो पर पीले रंग के फफोले दिखाई देने पर या पत्तियो पर भूरे धब्बे या नोक से पत्तियो के पीले पड़ कर मुरझाने पर प्रोपीकोनाजोल 25 ई0 सी0 का 1 लीटर/हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- गेहूँ मे पीली गेरूई के प्रकोप में पत्तियाँ पीली पड़ जाती है। खेत में पत्तियों को छूने से पीला रंग हाथ में लगे तो रोग के लक्षण दिखाई देते ही प्रोपीकोनाजाल 25 ई0 जो टिल्ट यादि के व्यवसायिक नाम से बाजार में उपलब्ध है के 500 मि0ली0 हैक्टर की दर से 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- मेंथा की बुवाई 15–20 फरवरी तक कर सकते हैं। उन्नतशील किस्मों– कोशी, सक्षम, कुशल, हिमालय, सरयू एवं संगंध पौध संस्थान के पन्तनगर प्रक्षेत्र से प्राप्त कर सकते हैं। 400–500 कि0ग्रा0 जड़/हैक्टर की आवश्यकता होती है। बुवाई से पूर्व जड़ों को 5–7 से0मी0 लम्बे टुकड़ों जिसमें 3–4 गांठे हो में काटते हैं। इसके उपरान्त 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति लीटर पानी में घोल कर इसमें 5 मिनट तक डुबोकर शोधित करते हैं। इसके बाद जड़ टुकड़ों को घोल से निकाल कर आधे घण्टे तक छायादार स्थान में सुखा कर बुवाई करते हैं।
- नौलख गन्ना की कटाई 15 फरवरी से पहले न करें।
- चना एवं मसूर में फलीवेदक कीट का प्रकोप होने पर फूल आते समय मैलाथियान 50 ई0सी0 के 2.0 लीटर अथवा क्यूनालफास 25 ई0सी0 1.5 लीटर/है0 की दर से 500–600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- चना व मसूर की फसल मे फूल बनते समय 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का पर्णीय छिड़काव करे। प्रथम छिड़काव के 10–15 दिन बाद दूसरा छिड़काव करे। प्रति हैक्टर 600–700 लीटर पानी का प्रयोग करे।

उद्यान प्रबन्धः

- गुजिया या करी कीट या मैंगो मिली बग के लिए लगायी गयी पॉलीथिन पट्टी को किसी साफ कपड़े से साफ करें।
- खर्रा रोग का संक्रमण अगर दिखाई पड़े तो निदान हेतु 0.2 प्रतिशत घुलनशील गंधक (2ग्राम/लीटर) का प्रथम छिड़काव करें।
- फरवरी माह में बाग की साफ–सफाई करनी चाहिए तथा पाले से बचाव के लिए लगाए गये पुआल अथवा घास इन्यादि को फरवरी के अन्तिम सप्ताह में निकाल देना चाहिए।
- फल पेड़ों में भुनगा कीट के नियंत्रण हेतु ऐमिडाक्लोरपिड 17.8 एस0एल0 का 0.03 मि0ली0/लीटर की दर से प्रथम छिड़काव पुष्पगुच्छ की शुरूआत में करें। फल की मटर अवस्था पर थियामैथौक्जैम से दूसरा छिड़काव 0.32 ग्राम/लीटर और तीसरा छिड़काव केवल आवश्यकता पड़ने पर दूसरे छिड़काव के 21 दिन बाद एन0एस0के0ई0 5 प्रतिशत का 5 मि0ली0/लीटर की दर से करें।
- लौकी, करेला, तोरई, काशीफल उगाने हेतु खेत की तैयारी करें।
- खीरा वर्गीय फसलों के लिए पोषक तत्वो के रूप में गोबर की सड़ी हुई खाद अथवा कम्पोस्ट खाद का अधिक से अधिक प्रयोग करें।
- मटर की पत्तियो पर पीले चकत्ते दिखाई देने पर प्रोपीकोनाजोल 1 मिली0/ली0 की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।

- ❖ मटर में पौधों की सूखने एवं निचली पत्तियां पीले पड़ने की अवस्था में कार्बन्डाजिम 1.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ों की सिंचाई करें ।
- ❖ प्याज और लहसुन की पत्तियॉ उपर से पीली पड़ने पर प्रोपीकोनाजोल या टेबूकोनाजोल का 1 मिली0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- ❖ आलू एवं टमाटर की फसल में पछेती झुलसा रोग के प्रकोप से बचाव हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्रा0/ली0 या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3.0 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करे।
- ❖ टमाटर में पीलापन लिए हुए भूरे धब्बे दिखाई देने पर मैन्कोजेब 2.5 से 3.0 ग्राम प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ गोभी वर्गीय सब्जियो में पत्ती धब्बा रोग के नियत्रंण हेतु मैन्कोजेब का 2.5 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- ❖ पातगोभी एवं फूलगोभी में निराई गुड़ाई करे यूरिया की टॉप ड्रेसिंग व खेत में नमी बनाकर रखें।

पशुपालन प्रबन्धः

- ❖ मुर्गियों के आवास के तापमान का अनुरक्षण करें। सरद ऋतु मे बिछावन की मोटाई बढा दे जिससे कुक्कुट को पर्याप्त गर्मी मिलती रहे।
- ❖ सरदी से बचाव के लिए पशुघर का प्रबंध ठीक से करें। पशुओं को ठंड से बचाव हेतु सूखी घास, पुवाल जो जानवरों के खाने के उपयोग में नहीं आती को बिछावन के रूप में प्रयोग करें। खिड़की दरवाजों पर त्रिपाल लगा दें ताकि ठंडी हवा प्रवेश न करें।
- ❖ पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए जिससे उनकी उत्पादन क्षमता प्रभावित न हो तथा इस समय नवजात पशुओं के रख–रखाव पर विशेष ध्यान दें।
- ❖ ठंड में पशुओं के आहार में तेल और गुड़ की मात्रा बढ़ा दें। अधिक ठंड की स्थिति में पशुओं को अजवाइन और गुड़ दें।
- ❖ जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- ❖ भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- ❖ पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पष्चात् 10–15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।

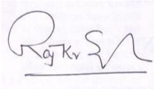

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर